मार्क्सवाद का नवीनीकरण

गोपाल प्रधान

मार्क्सवाद का नवीनीकरण

गोपाल प्रधान

अनुक्रम

गोपाल प्रधान से संदीप मील का साक्षात्कार	4
हिटलर और फ़ासीवाद का नया उभार	15
वोट के लुटेरे	18
विश्वविद्यालयों की बात	21
विनाशक पूंजीवाद	24
लोकतंत्र और मार्क्स-एंगेल्स	29
राजनीति में अतिवादी मध्य वर्ग	32
मुक्ति का मार्क्सवादी विमर्श	36
मार्क्सवादी दर्शन के बारे में	40
मार्क्सवाद के कुछ नए क्षेत्र	48
मार्क्सवाद की नवीनता	53
मार्क्सवाद और सामाजिक आंदोलन	63
मार्क्स चिंतन कोश	67
जलवायु परिवर्तन और अमिताभ घोष	74
मज़दूरों की मुक्ति के समर्पित मार्क्स	94
फ़ासीवाद की ओर यात्रा: चौराहे पर अमेरिका	112
पूंजीवाद का संक्षिप्त इतिहास	115
'पूंजी' के बारे में कुछ नये अध्ययन	120
'पूंजी' की लेखन प्रक्रिया और व्यवधान	128
पूंजी का संकट और समाजवादी प्रयोग	139

पर्यावरण के सवाल और मार्क्सवाद: कुछ किताबों की चर्चा 148

नवउदारवाद की समझ 161

नव उदारवाद का इतिहास समझने की कोशिश 166

दो सौ साल बाद मार्क्स का अर्थशास्त्र 169

डिजिटल दुनिया और मार्क्सवाद 172

जेम्स पेत्रास की नज़र से दुनिया का वर्तमान 185

क्रांति और विद्रोह का विश्व कोश 188

कार्यकर्ताओं की कला 191

एक और मार्क्स 194

उत्तर औद्योगिक समाज: एक साहित्य सर्वेक्षण 205

आज का समय और मार्क्सवाद के नये पहलू 212

ऑक्सफ़ोर्ड की मार्क्स सहायिका 265

गोपाल प्रधान से संदीप मील का साक्षात्कार

प्र: *समकालीन विश्व में मार्क्सवाद की अकादमिक बहसें किस तरह से आगे बढ़ रही हैं और उनमें भारतीय मार्क्सवादियों का क्या योगदान है ?*

उत्तर: सबसे पहले तो यही तय करना होगा कि किस समय को समकालीन कहा जाय। तमाम विवादों के बावजूद कहा जा सकता है कि पिछली सदी के आखिरी दशक से दुनिया में जो बदलाव शुरू हुए उनकी निरंतरता में हम मौजूद हैं। इस लिहाज से विगत लगभग तीस साल का समय समकालीन कहा जा सकता है। हालांकि वर्तमान समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे विगत तीस सालों की इस दुनिया के चरम परिणामों से हमारा साबका पड़ रहा है लेकिन यही मानना उचित होगा कि सोवियत संघ के पतन के बाद की नवउदारवादी वैचारिकी के प्रभुत्व का समय हमारा समकाल है। स्वाभाविक है कि इस समय के सवालों से जूझते हुए ही मार्क्सवाद का विकास हो रहा है। सोवियत संघ के खात्मे के दौरान और उसके तुरंत बाद अकादमिक दुनिया में उत्तर आधुनिकता का बोलबाला था। आज उसका कोई नामलेवा भी नहीं है। बहसें उन सैद्धांतिक कोटियों में चल रही हैं जिन्हें मार्क्सवादी विद्वानों ने लोकप्रिय बनाया था। सबसे पहले तो खुद मार्क्स का लेखन ही विराट शोध का विषय हो चला है। उनके समग्र लेखन के संपादन और प्रकाशन की परियोजना से संसार भर के चालीस से अधिक मार्क्स विशेषज्ञ जुड़े हुए हैं। प्रस्तावित योजना के अनुसार 140 खंडों में उनके समग्र का प्रकाशन होना है। सभी जानते हैं कि उनके जीवनकाल में लिखित का बहुत थोड़ा हिस्सा ही प्रकाशित हो सका था। देहांत के बाद एंगेल्स ने अनछपी पांडुलिपियों से निकालकर कुछ और प्रकाशित कराया। बचा हिस्सा जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी के दफ़्तर में उपेक्षित पड़ा रहा था। रूस में क्रांति के बाद समग्र छापने का काम डेविड रियाज़ानोव के संयोजन में शुरू हुआ। कुछ आंतरिक राजनीति में रुक गया। जर्मनी में रखे दस्तावेजों पर हिटलरी उभार के चलते खतरा पैदा हुआ। उन्हें एम्सटर्डम भेज दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फिर काम शुरू हुआ तो रूस में ही उलटफेर हो गया। इस बार उनके बचे हुए दस्तावेजों का अध्ययन और संपादन करके जो प्रकाशन हो रहा है तो मार्क्स के लेखन में मौजूद खुलेपन को लक्षित किया जा रहा है। उनके प्रकाशित लेखन के साथ इस अप्रकाशित सामग्री को मिलाकर देखने से उनकी

धरणाओं के निर्माण की प्रक्रिया का पता चल रहा है। इसके साथ वर्तमान दुनिया के अध्ययन के लिए जो मार्क्सवादी कोटियां कारगर सिद्ध हो रही हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण साम्राज्यवाद नामक कोटि है।

प्र: *वर्तमान पूंजीवाद और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के आपसी संबंधों को आप कैसे देखते हैं ?*

उत्तर: पूंजी के वर्तमान आक्रामक स्वरूप को वित्तीय साम्राज्यवाद के रूप में ग्रहण किया जा रहा है। मार्क्स ने बताया था कि पूंजी के निर्माण की प्रक्रिया में ही उसके नाश के तत्व निहित होते हैं। मुनाफ़े के लिए ही इसका निवेश होता है लेकिन मुनाफ़े को साकार करना लगातार कठिन होता जाता है। जब पूंजी के केंद्र में मुनाफ़ा कमाना कठिन हो जाता है तो पूंजी उन क्षेत्रों की ओर भागती है जहां प्राकृतिक संसाधन और मानव श्रम सुलभ और सस्ता हो। इसी क्रम में दुनिया के गैर पूंजीवादी आर्थिक परिक्षेत्र के साथ उसके साम्राज्यवादी संबंध बनते हैं। वास्तविक साम्राज्यवादी संबंध का अनुगमन सांस्कृतिक साम्राज्यवाद भी करता है। इसे फिलहाल के भाषाई परिदृश्य के विश्लेषण के जरिए अच्छी तरह समझा जा सकता है। जिस अंग्रेजी को आधुनिक दुनिया में दाखिल होने का टिकट समझा जा रहा है उसे किसी जमाने में अत्यंत तुच्छ समझा जाता था। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को पब्लिक स्कूल इसीलिए कहा जाता है कि वहां सामान्य जनता की संतानों को शिक्षा मिलती थी। अन्यथा श्रेष्ठता तो कानवेन्ट की स्कूली शिक्षा में हुआ करती थी जिनका संचालन चर्च की ओर से होता था। अंग्रेजी ही नहीं लगभग सभी यूरोपीय भाषाओं का विकास लैटिन के इस दबदबे से लड़कर हुआ लेकिन साम्राज्यवाद की स्थापना के साथ ये यूरोपीय भाषाएं खुद ही श्रेष्ठता निर्माण के इसी तंत्र का अंग बन गईं। आधुनिक काल में लोकप्रिय संचार माध्यमों में भाषा के दबदबे में आनेवाले बदलावों को देखें तो पूंजी की माया स्पष्ट हो जाती है।

प्र: *मार्क्स के समय तो इतनी उन्नत तकनीक नहीं थी। आज के दौर में जब सर्विलेंस कैपिटलिज्म की चर्चा हो रही और कहा जा रहा है कि तकनीकी विकास अमेरिकन साम्राज्यवाद के एक उपकरण के तौर पर विकसित किया*